प्रकाशन तिथि : 01 नवम्बर, 2019
प्रेषण तिथि : 04 नवम्बर 2019

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 | अंक 16 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

उत्साह से मनाई श्रद्धेय 'माट्साब' की जयंती

'ईच्छा और क्रिया के प्रतीक थे आयुवान सिंह जी'

प्रकृति में तीन गुण है सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण। ये आदि काल से हैं, आज भी हैं और सदैव रहेंगे। सतोगुण और तमोगुण नदी के दो किनारे हैं, न कहीं आते हैं, न कहीं जाते हैं। निष्क्रिय हैं लेकिन नदी स्वयं बहती है। सक्रिय रहती है, रजोगुण वह सक्रियता है। सत की ओर वह उन्मुख होता है तो दैवीय शक्ति बनती है और तमोगुण से मेल होने पर राक्षस वृत्ति का निर्माण होता है। आयुवान सिंह जी के बारे में जो सुना, पढ़ा, देखा उससे मुझे लगता है कि वे रजोगुण के प्रतीक थे। उनका पूरा जीवन ईच्छा और

क्रिया का प्रतीक बन गया। आयुवानसिंह जी की जयंती चाहे छोटे रूप में हो, बड़े रूप में हो, शिविर में हो या बाहर, संघ में हमेशा मनाई जाती है। उनका स्मरण किया जाता है। रजोगुण यदि राजपूत के हाथ से निकल जाए, उसके जीवन से निकल जाए तो राजपूत राजपूत ही नहीं रहता। दुकान में पड़े कार्टून में से यदि सामान निकाल लिया जाए तो वह कोरी जगह ही रोकता है और हमारे साथ भी कुछ ऐसा ही घटा। 17 अक्टूबर को संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में संघ के द्वितीय संघ प्रमुख पूज्य आयुवानसिंह जी की 99वीं जयंती एवं जन्म शताब्दी वर्ष के प्रारम्भ के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हजारों वर्षों तक लड़ते-लड़ते इस कौम में थकान तो नहीं आई लेकिन विकृतियां आनी प्रारम्भ हुई और तमोगुण ने हमारे पर प्रभाव छोड़ा। हमारे में से अनेक लोग कहते हैं कि क्या पुरानी बातें करते हो, वे गुमराह है और तनसिंह जी ने लिखा कि ऐसे गुमराह हठीलों को मार्ग दिखाने मैं आया हूं।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

अब 8 लाख वार्षिक आय ही होगी ई.डब्ल्यू.एस. का आधार

केन्द्र सरकार ने ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए संविधान में संशोधन कर अब तक आरक्षण से वंचित वर्ग को 10 प्रतिशत आरक्षण आर्थिक आधार पर दिया लेकिन आर्थिक आधार की शर्तें इतनी कड़ी थीं कि अधिकांश अनारक्षित वर्ग इसके दायरे में आ नहीं रहा था। संविधान ने ऐसे मामलों में अपने राज्यों में शर्तें तय करने का अधिकार राज्य सरकारों को दिया है। गुजरात सरकार ने अपनी उस संवैधानिक शक्ति का उपयोग करते हुए केवल 8 लाख वार्षिक आय के अलावा अचल सम्पति संबंधी सभी शर्तें केन्द्र सरकार के निर्णय के तुरंत बाद ही हटा दी। राजस्थान सरकार ने भी फरवरी 2019 में यह आरक्षण राजस्थान में लागू कर दिया लेकिन आर्थिक आधार की शर्तें केन्द्र द्वारा जारी आदेश के अनुरूप ही रखीं। राजस्थान जैसे मरुस्थलीय प्रदेश में ये शर्तें नितांत अव्यवहारिक थीं इसलिए प्रारम्भ से ही गुजरात सरकार की भांति इन शर्तों में संशोधन करने की मांग की जाने लगी। जनवरी 2019 में गठित श्री क्षत्रिय युवक संघ के अनुषांगिक संगठन श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन ने संघ के निर्देश पर सरकार तक यह मांग पहुंचाने का दायित्व लिया। साथ ही समाज को इस विषय में जागृत करने की प्रक्रिया भी प्रारम्भ की। सभी जगह बात कर संघ के स्वयंसेवकों के सहयोग से 12 मार्च 2019 को प्रशासन को ज्ञापन देकर सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया। सोशल मीडिया पर इस विषय पर मुहीम चलाई गई। इसकी विसंगतियों के प्रभाव से समाज को अवगत करवाया गया। सभी जनप्रतिनिधियों एवं दोनों मुख्य पार्टियों के स्थानीय पदाधिकारियों से फाउंडेशन के कार्यकर्ता मिले एवं उन्हें पूरा विषय समझा कर उनसे इस विषय में सहयोग करने की लिखित सहमति प्राप्त की। ऐसे सभी सहमति पत्रों को एकत्र कर राज्य के उप मुख्यमंत्री एवं विधानसभा अध्यक्ष से मिलकर उन्हें इन पत्रों की प्रतियां सौंपी गई एवं सामान्य वर्ग की न्याय पूर्ण मांग से अवगत करवाया गया। साथ ही तय मानदंडों के अनुसार भी प्रशासन द्वारा प्रमाण पत्र बनाने में की जा रही आनाकानी की जानकारी दी गई। मुख्यमंत्री जी से मिलने के लिए समय मांगा गया। मुख्यमंत्री कार्यालय के अधिकारियों से मिलकर उन्हें वस्तुस्थिति से अवगत करवाया गया। उनके सामने इन तथ्यों को पेश किया गया कि वर्तमान प्रावधानों के कारण कई बीपीएल परिवार भी इस आरक्षण के दायरे में नहीं आ रहे हैं। सरकार द्वारा चलाई जा रही प्रधानमंत्री आवास योजना जैसी अनेक योजनाएं जो गरीबों के लिए चलाई जा रही हैं, उनके पात्र लोग भी ई.डब्ल्यू.एस. आरक्षण से वंचित रह रहे हैं। जो इसकी मूल अवधारणा पर ही प्रश्न चिह्न है। इसी बीच विधानसभा का बजट सत्र प्रारम्भ हुआ। सत्र के दौरान विधानसभा में प्रभावी ढंग से यह मुद्दा उठे उसके लिए विधायकों से सम्पर्क साधा गया। फाउंडेशन के कार्यकर्ताओं द्वारा अपने-अपने क्षेत्र के विधायकों से मिलकर वंचित वर्ग की इस न्यायपूर्ण मांग को विधानसभा के माध्यम से सरकार के समक्ष उठाने की मांग की गई।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संघ प्रमुख श्री ने जताया मुख्यमंत्री जी का आभार

आर्थिक आधार पर आरक्षण विषय में विसंगतियों को दूर कर केवल आठ लाख वार्षिक आय को ही आधार बनाने पर माननीय संघ प्रमुख श्री ने राजस्थान के मुख्यमंत्री माननीय अशोक गहलोत से भेंट कर उनका आभार जताया। संघ प्रमुख श्री के साथ श्री प्रताप फाउंडेशन के संयोजक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी व कांग्रेस नेता धर्मेन्द्र सिंह राठौड़ भी उपस्थित थे।

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की विभिन्न जिला इकाइयों ने भी अपने-अपने क्षेत्र में इस कार्य में सहयोग करने वाले जनप्रतिनिधियों एवं विधायकों से मिलकर उनके सहयोग के लिए आभार जताया एवं केन्द्रीय टीम की ओर से उनको भेजा गया आभार पत्र प्रस्तुत किया।

'ईच्छा और क्रिया के प्रतीक थे आयुवान सिंह जी'

(पृष्ट एक से लगातार)

नादान लोग क्षत्रियत्व की बात को संकुचित कहते हैं जबकि प्राणी मात्र के लिए जीने वाला क्षत्रिय संकुचित कैसे हो सकता है? पूज्य तनसिंह जी और पूज्य आयुवानसिंह जी ने जिस संगठन की मजबूत नींव डाली उसका अभी 73वां वर्ष चल रहा है, 73 वर्ष समाज के जीवन के लिए कोई बड़ा समय नहीं है। संघ का अभी बाल्यकाल चल रहा है। पूज्य तनसिंह जी और पूज्य आयुवानसिंह जी में कुछ लोगों को विरोधाभास दिखाई पड़ता था और कुछ सीमा तक रहा भी होगा लेकिन उनमें आपसी आत्मीयता कितनी थी यह बात याद दिलाई जानी आवश्यक है। उनका आपस का पत्र व्यवहार इस बात का प्रमाण है जो आज भी संघ के पास मौजूद है। वर्तमान युग में राजपूतों को क्षत्रिय बनने का मार्ग दिखाने के लिए उन्होंने जो काम किया वो अद्भूत था, विलक्षण था। उनके साहित्य की बात यहां अभी की गई, उनकी एक पुस्तक 'राजपूत और भविष्य' के बारे में सोचता हूं कि क्षत्रिय युवाओं को अवश्य पढ़नी चाहिए। जहां तक श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य क्षेत्र है यह बात पहुंचनी चाहिए। मुझे लगता है कि विभिन्न प्रतिभाएं थी आयुवानसिंह

जोधपुर

कि इस कौम को, इस राष्ट्र को आगे ले जाने वालों में संघ का नाम अग्रिम पंक्ति में होगा। मेरा 20-25 साल का यह अनुभव है कि इस मार्ग के अलावा कोई चारा नहीं है। संघ चाहता है कि अनेक छोटे-छोटे प्रकल्प, छोटे-छोटे संगठन हमें बनाने चाहिए क्यों कि समाज में बहुत प्रतिभाएं छिपी हैं जो समाज के काम आएंगी। संघ अपना काम करता रहेगा क्योंकि वह आधार भूमि है जिससे उन सभी संगठनों का भोजन निकलेगा। पूज्य तनसिंह जी ने, पूज्य आयुवानसिंह जी ने जो बीज डाला, अपने जीवन से, खून-पसीने से सींचा, कठिनाइयों व तपस्या के बल पर आगे बढ़ाया उसे आगे बढ़ाना, जन जन तक पहुंचाना हमारा दायित्व है। उनकी स्मृति हमारे पटल से दूर न हो, यह साल हम बहुत अच्छी तरह मनाएंगे तो यह वर्ष

नागौर में साधना संगम संस्थान के तत्वावधान में पूज्य आयुवान सिंह जी हुडील की 99वीं जयंती संघ कार्यालय आयुवान निकेतन, कुचामन सिटी में मनाई गई जिसमें उपस्थित समाजबंधुओं ने पूज्य श्री को पुषपांजलि अर्पित की। नागौर संभाग प्रमुख शिंभूसिंह आसरवा ने समाजबंधुओं को संबोधित करते हुए कहा कि संघ 2019-20 को पूज्य आयुवान सिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मना रहा है अतः हम सभी को यथासंभव सहयोग कर पूज्य श्री को श्रद्धासुमन अर्पित करने चाहिए। पूज्य श्री ने जीवन भर विपरीत परिस्थितियों में संघर्ष कर हमें निरन्तर कर्मशील होने की सीख दी है। एक कुशल नेता, कुशल राजनीतिज्ञ, कुशल साहित्यकार के रूप में भटकते जनों को राह दिखाई है। हमें स्वतः

आयुवान सिंह जी की जयंती मनाई गई। नागौर में ही अमर राजपूत छात्रावास में लगने वाली सायंकालीन शाखा में आयुवान सिंह जी हुडील की 99वीं जयंती मनाई गई जिसमें श्यामसिंह छापड़ा ने आयुवान सिंह जी और श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में उपस्थित समाजबंधुओं को बताया। बाड़मेर शहर प्रान्त का कार्यक्रम राजपूत सभा भवन, गांधीनगर में रखा गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रांतप्रमुख महिपालसिंह चूली ने कहा कि महापुरुष अपने जीवन दर्शन से आने वाली पीढ़ियों के लिए रास्ता तय करते हैं। आयुवानसिंह जी भी ऐसे ही युगपुरुष थे। वे एक सच्चे समाजसेवक, उत्कृष्ट लेखक व प्रखर राजनीतिज्ञ थे। उनका जीवन हमारे लिए प्रेरणास्त्रोत है। हमें भी उनकी भांति संघर्ष और कष्टों को सहन करते हुए समाजसेवा में जुट जाना है, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। कार्यक्रम में विभिन्न शाखाओं से आए 200 से अधिक स्वयंसेवकों ने पुष्पांजलि अर्पित की। जैसलमेर संभाग के चांधन प्रान्त में मूलाना पंचायत मुख्यालय पर स्थित शाखा मैदान में भी जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई। अचलसिंह ने माटसाब का सम्पूर्ण जीवन परिचय प्रस्तुत किया। रतन सिंह

मुम्बई

चौहटन

जी में, उन प्रतिभाओं व विशेषताओं का प्रकटीकरण होने में थोड़ी कंजूसी रही, समय नहीं मिला। योजना बनाना उनका एक अद्भुत गुण था। योजना बनाने वाला इस युग में उनके जैसा नहीं हुआ। उनकी एक विलक्षणता थी कि उनकी गरीब से गरीब व्यक्ति से लेकर राजा महाराजाओं तक अच्छी पकड़ थी। इसी कारण पूरे राजस्थान में राजनीति से संबंधित जितने भी निर्णय हुए उनमें उनका विशेष योगदान रहा। उनका कहना था कि बलवान बने बिना संघर्ष नहीं हो सकता और संघर्ष के बिना क्षत्रिय क्षत्रिय कैसे रह सकता है? कौन-कौन सी शक्तियां है और उनकी उपासना उन्होंने कैसे की वह सब उनके साहित्य में समाई है। हमें उस साहित्य को पूरे समाज तक पहुंचाना है। विभिन्न कार्यक्रम उनके जन्म शताब्दी वर्ष के लिए संघ ने तय किए हैं उनमें मैं यह और जोड़ता हूं कि कम से कम 100 जगह इस प्रकार समारोहपूर्वक उनकी जयंती मनाई जाए। भू-स्वामी आंदोलन के बाद 1955 में मेड़ता शिविर में आए गुजरात के लोगों के आग्रह पर संघ का काम गुजरात में प्रारम्भ हुआ। ऐसे में गुजरात के भावनगर में संघ का प्रथम शिविर हुआ। आयुवानसिंह जी उसमें गए और वहां संघ का कार्य प्रारम्भ किया। पूज्य तनसिंह ने रजत जयंती के अवसर पर लिखा था

मील का पत्थर बनेगा हम सबके लिए।

कार्यक्रम में शहर में रहने वाले समाजबंधु सपरिवार सम्मिलित हुए। जोधपुर शहर में श्रद्धेय माटसाब की जयन्ती पावटा स्थित हनवंत राजपूत छात्रावास में केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा व रेवंतसिंह पाटोदा की उपस्थिति में मनाई गई। आयुवानसिंह जी का जीवन परिचय देते हुए रेवंतसिंह पाटोदा ने बताया कि माट्साब बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। उनका जीवन संघर्ष का पर्याय रहा, अभाव और कष्ट उनके साथी रहे। उन्होंने साधन के हठ को त्यागकर समयानुकूल साधनों का प्रयोग कर शांतिपूर्ण तरीके से अनेक आंदोलनों का सफल संचालन किया। वे लोकतांत्रिक साधनों के प्रयोग के प्रति समाज को जागृत करने में अग्रगामी रहे। उपस्थित समाजबंधुओं ने माट्साब की तस्वीर पर पुष्प अर्पित करके अपनी श्रद्धांजलि प्रकट की। जोधपुर संभाग में ही शेरगढ़ प्रांत के बेलवा राजगढ़ की महाराणा प्रताप और पद्मावत शाखा द्वारा पूज्य आयुवान सिंह जी हुडील की जयंती मनाई गई।

जसवंत हॉस्टल, जोधपुर

स्फूर्त होकर सद्कार्यों के द्वारा पूज्य श्री को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करनी हैं। संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक व साधना संगम संस्थान के उपाध्यक्ष भगवत सिंह सिंघाना ने कहा कि माट्साब आयुवान सिंह हुडील ने एक साधारण परिवार में जन्म लेकर भी अपनी विलक्षणता से असाधारणता को प्राप्त किया। एक कुशल प्रशासक के रूप में आयुवान सिंह जी ने पूज्य श्री तनसिंह जी, मदन सिंह जी दांता व अन्य समाज बंधुओं के साथ भु-स्वामी आंदोलन का सफल संचालन किया। विषम आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद जीवन भर मां रूपी समाज की सेवा करते रहे अतः वे हमारे लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। इसी प्रकार श्री हनुमंत राजपूत छात्रावास कुचामन सिटी में भी पूज्य

बडोड़ागांव ने बताया कि वे एक सुलझे हुए समाज संगठक थे जिन्होंने हमें समाजचरित्र का अर्थ समझाया। उन्होंने अनेक उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएं लिखी जो हजारों युवाओं को आज भी प्रेरणा प्रदान करती है। उनका सम्पूर्ण जीवन साधनामय था। जो भी उनके सम्पर्क में आया उन्होंने उसे स्वधर्म का बोध करवाकर कर्त्तव्य मार्ग पर प्रवृत किया। प्रधानाचार्य गोविंद सिंह नाथावत ने बताया कि हुडील जैसे छोटे से गांव में जन्म लेकर भी आयुवान सिंह जी अपनी निःस्वार्थ समाजसेवा के कारण जन-जन के आराध्य बन गए। उपस्थित समाजबंधुओं ने आयुवानसिंह जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। कार्यक्रम में बलवंतसिंह, भूरसिंह जागा, राजूसिंह, गिरधरसिंह, प्रेमसिंह, बाबूसिंह, राजेंद्र सिंह, आईनाथ स्कूल के समस्त स्टाफ तथा शाखा के स्वयंसेवक उपस्थित थे। चौहटन स्थित श्री भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस में तनसिंह जनकल्याण संस्थान बाड़मेर के तत्वावधान में आयुवान सिंह जी हुडील की जयंती समारोह पूर्वक मनाई गई। प्रान्त प्रमुख उदयसिंह देदुसर ने कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि आयुवान सिंह जी बाल्यकाल से ही मेधावी छात्र रहे। (शेष पृष्ठ 6 पर)

शिविरों की शृंखला में जुड़ी तेरह और कड़ियां

पीपलून

श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रशिक्षण शिविरों की शृंखला अनवरत रूप से चल रही है। 19 से 26 अक्टूबर की आठ दिन की अवधि में इस शृंखला में तेरह कड़ियां और जुड़ीं। इन तेरह शिविरों में पांच सात दिवसीय तथा आठ चार दिवसीय शिविर रहे। इनमें चार बालिकाओं के शिविर भी सम्मिलित हैं।

पोकरण संभाग में पोकरण प्रान्त के फलसूंड गांव में 20 से 26 अक्टूबर तक सात दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ जिसमें फलसूंड, केसुम्बला, राजमथाई, भैंसडा, झलोड़ा, दातल, अवाय, तेजमालता, झिंझनियाली, बेरसियाला, पारासर, भुर्जगढ़ एटा आदि गांवों के 96 युवाओं ने संघ का अग्रेतर प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन महेंद्रसिंह गुजरावास ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि क्षत्रिय के अपना स्वधर्म भूलने से यत्र-तत्र-सर्वत्र धर्म, सत्य और न्याय की हानि हो रही है। क्षत्रिय के द्वारा स्वधर्म पालन में ही मानवता का कल्याण संभव है क्योंकि क्षात्रधर्म स्वयं को मिटाकर भी अन्यों की रक्षा करने की बात करता है, प्राप्ति की अपेक्षा त्याग की शिक्षा देता है, सुखभोग पर स्वाभिमान और आत्मसम्मान की महत्ता को स्थापित करता है। संघ हमें उसी क्षात्रधर्म की, हमारे स्वधर्म की याद दिला रहा है। दानसिंह, आनंदसिंह, मदनसिंह, अर्जुनसिंह फलसूंड ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर के दौरान 23 अक्टूबर को वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकरसिंह जी महरोली के सान्निध्य

नाडोल

में यथार्थ गीता वितरण कार्यक्रम भी आयोजित हुआ, जिसमें अन्य सर्व समाज के बंधुओं को यथार्थ गीता वितरित की गई।

20 से 26 अक्टूबर की अवधि में ही सिवाना के निकटवर्ती पीपलून गांव में गणपतसिंह जी के कृषि फार्म पर सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में काठाड़ी, बुडीवाडा, चान्देसरा, पादरु, उमरलाई, नौसर, इन्द्राणा, गुंगरोट, मवड़ी, कालाथल, देवन्दी, भागली सिन्धलान, गोलिया महेचान, टापरा, कुण्डल, पिपलून, राणासर कल्ला, नौसर, सवाऊ, बालू, बालियाणा, चिरडिया, मेवानगर, हवेली, धारणा, मोढा, दूधवा, झिंझनियाली, धीरा, भाषा, सांगाणा, थोब, केरावा, देलदरी, केसरपुरा, पादरड़ी कल्ला आदि गांवों के 70 युवाओं ने संघ का अग्रेतर प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए संघ के केंद्रीय कार्यकारी रेवन्त सिंह पाटोदा ने कहा कि इन सात दिनों में हमने अनेकों श्रेष्ठ मयार्दाओं व श्रेष्ठ बन्धनों को जीवन में आत्मसात करने का अभ्यास किया, साथ ही कमजोर बन्धनों को छोड़ने का संकल्प लिया। श्रेष्ठ बन्धनों को स्वीकार करने का जो अंकुरण हमारे हृदय, अन्तर्मन में प्रस्फुटित हुआ है उसे सींचते रहें। यहां जो कुछ पाया उसे संसार में आदर्श जीवन जीकर आचरण में लाएं एवं हमारे उज्ज्वल इतिहास को प्रेरक मानकर आगे बढ़ते रहें। शिविर में संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक भवानी सिंह जीनपुर तथा संभाग प्रमुख मुलसिंह काठाड़ी भी उपस्थित रहे। व्यवस्था का जिम्मा गणपत सिंह पीपलून ने संभाला। इसी प्रकार जोधपुर संभाग का सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर जोधपुर शहर प्रान्त के पाल गांव में स्थित 'पंवार कृषि फार्म' में 19 से 25 अक्टूबर तक आयोजित हुआ जिसमें जोधपुर शहर की विभिन्न शाखाओं के अलावा पाल, बेलवा, सेतरावा, बापिणी, बेदु, मेफा, कड़वा, खनौड़ी, तिंवरी आदि गांवों के लगभग 70 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन खींवसिंह सुल्ताना ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि संघ के पास संपत्ति के रूप में केवल पूज्य तनसिंह जी की समाज के प्रति पीड़ा ही है। वही संपत्ति संघ आपको प्रदान कर रहा है क्योंकि आप संघ के अत्यधिक प्रिय हैं। यह पीड़ा आपको जगाए रखेगी, आपको अपना कर्त्तव्य भूलने नहीं देगी और यदि कभी यह स्मृति धूमिल होने लगे तो पुनः शिविर में आ जाना। रामप्रताप सिंह पाल, विरेन्द्र प्रताप सिंह पाल तथा उम्मेदसिंह खारड़ा आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। समापन कार्यक्रम में संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा तथा केन्द्रीय जलशक्ति मंत्री व संघ के स्वयंसेवक गजेन्द्र सिंह महरोली भी उपस्थित रहे।

जालोर संभाग में भी सांचोर प्रान्त में एक सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर राजपूत छात्रावास, रानीवाडा में आयोजित हुआ जिसमें जालोर, सिरोही व पाली जिलों के दहिवा, जीवाणा, गोपाल छात्रावास भीनमाल, करड़ा, जाखड़ी, रतनपुर, सुरावा, डुंगरी, सेवाड़ा, पुरण, मांडाणी, देलदर, वीर झाड़ोली, कुआड़ा, सुराणा, सतापूरा, केरिया, सांचोर, उदयपुर आदि स्थानों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 19 से 25 अक्टूबर तक आयोजित इस शिविर का संचालन वरिष्ठ स्वयंसेवक देवी सिंह माडपुरा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि संघ का कार्य लोकसंग्रह का है जिसमें हमारा आचरण श्रेष्ठ कोटि का होना पहली आवश्यकता है। हम जो शिक्षण दे रहे हैं, वह यदि हमारे व्यक्तित्व का अभिन्न हिस्सा है तो ही हमारी कही हुई बात का शिक्षार्थी पर प्रभाव पड़ेगा। वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता छैल सिंह रतनपुर के नेतृत्व में रानीवाड़ा तहसील के समाज बंधुओं ने व्यवस्था में सहयोग किया। शिविर के दौरान 24 अक्टूबर को रानीवाडा तहसील के समाज बंधुओं का स्नेहमिलन भी रखा गया। इसी प्रकार बाड़मेर संभाग के शिव प्रांत के अंतर्गत भिंयाड़ कस्बे में मातेश्वरी शाखा मैदान में 19 से 25 अक्टूबर तक सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर कि आयोजन हुआ। शिविर का संचालन संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि हमने जो श्रेष्ठ तत्व संघ से पाया है, उसे समाज और राष्ट्र में आगे बांटना है। वर्तमान युग विचार क्रांति का युग है। विचार ही आज का सबसे शक्तिशाली शस्त्र है। संघ की विचारधारा को हमें आगे से आगे बढ़ाना है और इसका मुख्य साधन कोरे शब्द नहीं, अपितु हमारा आचरण, हमारा जीवन व्यवहार है। शिविर में बाड़मेर संभाग के 151 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बीकानेर सम्भाग में नोखा प्रान्त के गोविन्दनगर रोडा गांव में 19 से 22 अक्टूबर तक शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें भादला, शोभाणा, सारूण्डा, भेलू, मोरखाना, किरतासर, गजरूपदेसर, नोखागांव, कंवलीसर, रोडा आदि गांवों के 78 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का

जोधपुर

संचालन करते हुए गुलाबसिंह आशापुरा ने शिविरार्थियों से कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रयोगशाला है, तपोभूमि है जिसमें से निकला हुआ व्यक्ति कहीं भी किसी क्षेत्र में जाएगा तो वह अपनी अलग छाप छोड़ेगा और समाज व देश के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। हममें जितनी भी बुराईयां है उन्हें हमसे लेकर संघ बदले में गुणों को हमारे जीवन में स्थायित्व प्रदान कर रहा है। बहादुर सिंह रोडा तथा धूडसिंह रोडा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। बीकानेर संभाग में ही बीकानेर शहर में स्थित संभागीय कार्यालय श्री नारायण निकेतन में 22 से 25 अक्टूबर तक चार दिवसीय बालिका प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें बीकानेर शहर के अलावा झंझेउ, किरतासर, पुण्दलसर, जोधासर, भेलू, नोखा, छतरगढ़, लालावाली, आरडी 465, मोरखाना, भादला, मेड़ी का मगरा आदि गांवों की 85 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालिका संतोष कंवर सिसरवादा ने अपने स्वागत उद्बोधन में बालिकाओं से कहा कि बालिकाएं समाज की गौरव हैं, सामाजिक गरिमा की प्रहरी है। आप ही अपने जीवन को संस्कारित कर सशक्त मातृशक्ति बन भारत के भावी भविष्य का निर्माण करने में अहम भूमिका निभाएंगी, अतः अपने महत्त्व और उत्तरदायित्व को समझें। संघ शिक्षण को जीवन में ढालकर परिवार, समाज, राष्ट्र और मानवता की सेवा में स्वयं को नियोजित करना ही हमारे जीवन की सार्थकता होगी।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

रानीवाड़ा

संपादकीय

झूठ का सहारा, सत्ता की सीढ़ी

विगत दिनों बंगाल के मुर्शिदाबाद का ट्रिपल हत्याकांड सोशल मीडिया में लंबे समय तक चर्चा का विषय रहा। शिक्षक बंधुप्रकाश पाल, उनकी पत्नी ब्यूटीपाल एवं बेटे आर्यपाल की नृशंश हत्या की तस्वीरे साझा कर यह प्रचालित किया गया कि उनकी हत्या किसी संगठन विशेष से जुड़े होने के कारण किसी पंथ विशेष के लोगों ने की। उत्साही लोगों ने हत्यारे की दाढ़ी वाली फोटो भी शेयर कर दी और इस घटना को मजहबी रंग देने का पूरा प्रयास किया गया। लेकिन कालांतर में पुलिस जांच में सामने आया कि हत्या का कारण पैसे का आपसी लेन-देन था और हत्यारा भी उस मजहब का नहीं था जिसका प्रचारित किया जा रहा था। इस प्रकार पूरे प्रकरण में सोशल मीडिया का उपयोग करने वाले लोग एक झूठी सूचना को कई दिनों तक आपस में साझा कर अनेक अनुकूल प्रतिकूल टिप्पणी करते रहे और कुछ चुनिंदा लोगों द्वारा कतिपय राज्यों में चुनाव से पहले मजहबी दलबंदी के लिए किए जा रहे प्रयासों का जाने अनजाने में अनुसरण करते रहे। इस प्रकार एक झूठ के सहारे सत्ता की सीढ़ी टिका कर ऊपर चढ़ने का प्रयास किया गया और दुर्भाग्य की बात यह है कि देश में जिम्मेदार लोगों ने भी इस झूठ को प्रसारित करने में पूरा योगदान दिया। लेकिन क्या यह आश्चर्य की बात है? इस देश में जिम्मेदार पदों पर बैठे लोगों ने क्या पहली बार झूठ बोला है? पिछले वर्षों में देखें तो अनेक ऐसे अवसर आए जब जिम्मेदार लोगों द्वारा सार्वजनिक रूप से झूठ बोला गया और बाद वह झूठ बेनकाब भी हुआ। अनेक बार ऐसा भी लगा कि कुछ झूठ जान बूझकर बोले गए और उनको आधार बनाकर अपेक्षित वातावरण बनाया गया। लेकिन क्या ऐसा इन्हीं वर्षों में हो रहा है। क्या इससे पहले इस देश में झूठ के सहारे सत्ता की सीढ़ी नहीं चढ़ा गया? यदि तटस्थ विश्लेषण करें तो आजादी के बाद से ही झूठ का यह व्यापार अनवरत जारी है। अपनी सुविधानुसार उस झूठ का उपयोग किया गया। बिना किसी ठोस तथ्य के यह प्रसारित करना कि आर्यों ने भारत के मूल निवासियों को भगाकर भारत पर कब्जा किया, क्या झूठ नहीं था? बिना किसी सबूत के इन्द्र के एक पर्यायवाची शब्द को आधार बनाकर आर्यों को सिंधु सभ्यता का विध्वंशक घोषित करना क्या झूठ नहीं था? केवल घोड़े के अस्तित्व के प्रमाण न मिलने के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता के वासियों को युद्ध न करने वाले घोषित करना क्या झूठ नहीं है? रामायण एवं महाभारत में वर्णित घटनाओं को केवल काव्य बताना क्या झूठ नहीं था? क्या कुछ गिने चुने बदनाम उदाहरणों के आधार पर पूरी राजपूत जाति को अत्याचारी एवं शोषक घोषित करना झूठ नहीं था? केवल अपनी सुविधा के लिए हल्दीघाटी के युद्ध में प्रताप की हार बताना झूठ नहीं था? क्या जयचंद को गौरी का निमंत्रक या महाराणा सांगा को बाबर का निमंत्रक बताकर विवाद खड़ा करना झूठ नहीं था? निश्चित रूप से ये सब झूठ ही थे लेकिन फिर भी ये झूठ प्रतीत नहीं हुए और सच के रूप में जनमानस में प्रसारित कर दिए गए क्यों कि इन्हें बहुत ही योजनाबद्ध रूप से सरकारी संस्थाओं द्वारा बुलवाया गया। उदाहरण के लिए एनसीईआरटी का गठन कर उसमें अपनी सुविधानुसार लोगों को नियुक्त कर उनमें अपनी सुविधा की बात कहलवाई गई। केवल कहलवाई ही नहीं गई बल्कि पूरी पीढ़ी को सरकारी तौर पर यही पढ़ाया गया और उस पढ़ाई के परिणाम स्वरूप पूरा एक वर्ग ऐसा तैयार हो गया जो इस झूठ को ही सत्य मानता रहा और मानता भी है। यह तो सत्ता की सीढ़ियां चढ़ाने वाले झूठ के एक प्रकार के उदाहरण है, ऐसे अनेक प्रकार के झूठ बोलकर सत्ता हासिल करने के प्रयास जारी रहे। विगत वर्षों में सत्ता पर काबिज होने वाले लोग परिवर्तन का नारा देकर सत्ता में आए, पहले वालों की बुराई कर सत्ता में आए, उनकी कमियां बताकर सत्ता में आए और विकल्प बनने का वादा करके सत्ता में आए लेकिन झूठ का क्रम पहले की तरह बदस्तूर जारी है। पहले वाला झूठ संस्थागत रूप से बोला जाता था, स्वयं न बोलकर अन्यों से बुलवाया जाता था लेकिन नए वालों को तो अभी संस्थाओं पर कब्जा करना है और उसकी एक लंबी प्रक्रिया है इसलिए इनका झूठ पहले वालों की तरह ढका हुआ न होकर नंगा होता है और जल्दी ही प्रकट हो जाता है। लेकिन झूठ कितना ही नंगा हो या ढका हुआ हो, ज्यादा दिन टिकता नहीं है यह आजादी के बाद भारत का राजनीतिक इतिहास बताता है। सत्य के आधार बिना पनपी व्यवस्था असत्य के ढहते ही ढहने लगती है, वर्तमान भारत में विगत 70 वर्षों में ही जीर्ण शीर्ण होकर दयनीय अवस्था को प्राप्त हुए या समाप्त हो चुके राजनीतिक दल इसके उदाहरण हैं। लेकिन हमारे पूर्वजों द्वारा पोषित भारतीयता का आधार झूठ नहीं बल्कि सत्यता था इसलिए हजारों वर्षों के झंझावतों को झेलकर भी इस भारत की भारतीयता इसकी जड़ों में गहराई तक समाई हुई है और उसी भारतीयता के बल पर अनेक प्रकार के झूठ और फरेब के बावजूद यह भारत जिंदा है। हमारा दायित्व बनता है कि हम इस भारतीयता के लिए हमारे पूर्वजों की तरह कर्तव्य कर्म करते रहें। हमारा यह दायित्व बोध ही भारतीयता का प्राण है और श्री क्षत्रिय युवक संघ उस दायित्व बोध की ही पाठशाला है।

खरी-खरी

'राजनेता, समाज और पार्टी'

शीर्षक में दिए गए तीनों शब्द प्रायः हमारी बैठकों में विमर्श का विषय होते हैं। प्रायः सामाजिक बैठकों में राजनेताओं पर पार्टी भक्त बनकर समाज की उपेक्षा करने के आरोप लगते रहते हैं और लोग आक्रोश पूर्वक शिकायत भी करते हैं। उनका यह आरोप होता है कि राजनेताओं को टिकट समाज के कोटे से मिलते हैं, समाज के लोग उनका सहयोग करते हैं, उनको एक मुश्त वोट भी देने का अभियान चलाते हैं, समाज के कोटे से वे मंत्री आदि बनते हैं उसके बावजूद वे समाज की अपेक्षा पार्टी को तरजीह देते हैं। इस आरोप की सत्यता को जांचने जाएं तो पाते हैं कि समाज के आम लोग समाज के राजनेताओं के लिए सद्भावना रखते हैं इसमें कोई दो राय नहीं है। वे समाज के आदमी को राजनीति में आगे बढ़ाने के लिए यथा योग्य प्रयास भी करते हैं इसको भी नकारा नहीं जा सकता। इसलिए समाज के लोग स्वाभाविक रूप से उन पर अधिकार जताते हैं और उनको भी एक सीमा तक उस अधिकार को स्वीकार करना चाहिए। यदि राजनेता सफल होने के बाद समाज के सहयोग के प्रति नमनशीलता नहीं रखते हैं तो यह उनकी एहसान फरामोशी है और ऐसा करके वे अपनी चारित्रिक निर्बलता का ही परिचय देते हैं। अपनी जड़ों को भूल कर आसमान में ऊपर उठने की चाह रखने वाले लोगों के साथ जो होता है वैसा उनके साथ भी होने की संभावना बनी रहती है और वैसा न भी हो तो भी कृतज्ञता के अभाव में वे इंसानियत के स्तर से गिरते तो अवश्य ही हैं। लेकिन यहां हमें समाज के लोगों के शिकायतों के स्तर के बारे में भी निष्पक्ष रूप से विचार करना चाहिए। समाज की उपेक्षा करने की शिकायत करने वाले लोग यह चाहते हैं कि समाज के राजनेता अपनी पार्टी की उपेक्षा कर उनकी बात को तरजीह दें। वे यदि यह चाहते हैं कि वे अपनी राजनीतिक पार्टी के आदेश एवं रीति-नीति की अवहेलना कर केवल उनकी ही बात मानें तो इस चाह को भी उचित तो नहीं कहा जा सकता। माना कि समाज के कोटे से टिकट मिली, माना कि समाज के कोटे से मंत्री बने और माना कि समाज के लोगों ने उन्हें वोट दिए, सहयोग किया जिसने उनके जीतने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई लेकिन क्या हमें यह भी नहीं मानना चाहिए कि टिकट दी तो पार्टी ने है, मंत्री बनाया तो पार्टी ने है या फिर वे केवल आपके वोटों से तो नहीं जीते हैं, उन्हें उनकी पार्टी के भी वोट तो मिले ही होंगे। इसलिए उनकी पार्टी की भूमिका या पार्टी का महत्व भी समाज से कम तो नहीं है। ऐसे में समाज को उनसे अपेक्षा करते समय ध्यान रखना ही चाहिए कि ये समाज की अपेक्षा पार्टी के गुलाम अधिक हैं। यहां यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि उन्हें अपने आपको समाज का भी गुलाम मानना चाहिए लेकिन वे ऐसा मानते नहीं है और पार्टी को सदैव माई बाप ही मानते हैं। लेकिन वे समाज को माई बाप नहीं मानते इसका कारण भी क्या यह नहीं है कि समाज के लोग उनके जीतते ही या उनके कुछ बनते ही उनको ही माई बाप मानने लगते हैं। अपने छोटे-छोटे स्वार्थों के कारण राजनेताओं के आगे लमलेट होने वाले लोग या उनकी कृपा दृष्टि प्राप्त करने को लालायित लोग यह अपेक्षा करते हैं कि वे नेता समाज को माई बाप मानें तो यह प्रहसन सा लगता है। इसलिए हमें वस्तुनिष्ठ होकर सोचना चाहिए। राजनीतिक पार्टियों के निर्देशों की अवहेलना करना आज के जमाने में किसी राजनेता के वश की बात नहीं है और जो बाहर मंचों पर खड़े होकर ऐसा करने की घोषणा करते हैं उनके द्वारा अपने स्वार्थों के लिए पार्टी की ही नहीं बल्कि पार्टी के किसी एक नेता की चापलूसी करने के उदाहरण जरा सी खोजी दृष्टि रखने पर ही देखे जा सकते हैं। हमारी वस्तुनिष्ठता ही हमारे व्यवहार को संतुलित करेगी और हमारी चाह व सामने वाले की मजबूरी दोनों को समझने की क्षमता पैदा करेगी। ऐसा करने पर हमें राजनेताओं के व्यवहार के कारण उन पर समाज की उपेक्षा करने के आरोप लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी क्यों कि इससे हमारी उनसे अपेक्षा ही सीमित होती जाएगी।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
01.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	09.11.2019 से 12.11.2019 तक	वनदेवी समिति, धरियावाद, रोड, प्रतापगढ़।
02.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	21.11.2019 से 24.11.2019 तक	सोईतरा, शेरगढ़ (जोधपुर)। 38 मील उतर कर पहुंचे। शेरगढ़ से भी बसें उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** 9950188901
03.	तीन दिवसीय प्र.शि. बालक	31.11.2019 से 02.12.2019 तक	जड़िया, तहसील धानेरा, बनासकांठा। धानेरा से 10 किमी. दूर।
04.	चार दिवसीय प्र.शि. बालिका	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	पिपलिया मंडी, मंदसौर (मध्यप्रदेश)। (नेचुरल पब्लिक स्कूल) **सम्पर्क सूत्र :** 9926685051, 7000207921 8085207733
05.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	22.12.2019 से 25.12.2019 तक	जीएसएम स्कूल, महागढ़, नीमच (मध्यप्रदेश)। **सम्पर्क सूत्र :** 9425974693, 8349912938
06.	चार दिवसीय प्र.शि. बालक	26.12.2019 से 29.12.2019 तक	आशापुरा माता मंदिर, गैलाना। तहसील सुवासरा मंदसौर (मध्यप्रदेश) **सम्पर्क सूत्र :** 9977800497, 9926738399, 9754218326
07.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	भोजराजसिंह की ढाणी, जैसलमेर रामगढ़ जैसलमेर मार्ग पर स्थित।
08.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	सिरसला, नागौर।
09.	सात दिवसीय प्र.शि. बालक	25.12.2019 से 31.12.2019 तक	भादला (बीकानेर)। नोखा के लखारा चौराहे व बीकानेर के गंगानगर चौराहे से बस।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

बनासकांठा में सम्पर्क यात्रा

बनासकांठा में नवम्बर माह में बालक एवं बालिकाओं के दो सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। इन शिविरों के प्रचार-प्रसार के लिए संघ की स्थानीय टीम ने सम्पर्क यात्रा का आयोजन किया। यह सम्पर्क यात्रा 2 अक्टूबर से 20 अक्टूबर तक विभिन्न चरणों में आयोजित की गई। 6 अक्टूबर को डीसा तहसील के रामसण, नांदला, कुड़ा, जसरा और लाखणी में सम्पर्क किया वहीं धानेरा के नेनावा, लवारा, वीछीवाड़ी, चारड़ा, गोला, जड़िया, भाटीप, जाड़ी, सिया, मालोत्रा, सामरवाड़ा, अनापुर, मांडल, नेनावा, आलवाड़ा, राजोड़ा गांवों में सम्पर्क किया। वाव तहसील के ढीमा, आछुआ, गोलगाम, बुकणा, नालोदर, कारेली में सम्पर्क किया। 7 अक्टूबर को वड़गाम के मेजरपुरा, लक्ष्मीपुरा, मगरवाड़ा, वेसा, नगाणा, थलवाड़ा, डालवाणा, कोदराम, वडगाम, मजादर, नलासर में सम्पर्क किया। दांतीवाड़ा तहसील के गोंगुदरा, ओढना, भीलाचल, वावतरा, वांसवाल, पांथावाड़ा, मातसण, धनियावाड़ा, आकोली, वासड़ा, मटुकी आदि गांवों में भी 7 अक्टूबर को सम्पर्क किया। 12 एवं 13 अक्टूबर को भाटवर, धनाणा, बेणप, दुधवा, लिवोणी, सुईगांव, काणोठी आदि गांवों में व दियादर तहसील के जालोटा, वातम, फोरणा, धनकवाड़ा, लीलाधर, पालड़ी, चीभड़ा, गोलवी, धुणसोल गांवों में 15 अक्टूबर को सम्पर्क किया। 18 अक्टूबर को कंबोई, आगणवाड़ा, आकोली, खिमाणा, वडावली, थराद, डुगरासण, बलोचपुर, मानपुर, उण, भलगाम, राणकपुर, खेंगारपुरा, खारिया आदि गांवों में सम्पर्क किया। इस प्रकार इन 14 दिनों में 9 तहसीलों के 101 गांवों में जाकर संघ का संदेश व शिविर की पत्रिका दी। इन पूरी सम्पर्क यात्रा के लिए प्रांत प्रमुख अजीतसिंह कुणधेर के नेतृत्व में 51 स्वयंसेवकों के 9 दल बनाए गए। सम्पर्क के यात्रा के बाद बालकों के शिविर हेतु 400 एवं बालिकाओं के शिविर हेतु 500 पात्र शिविरार्थियों को चिह्नित किया गया।

सिवाना व झुंझुनूं में बैठक

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की बैठकों के दौर में 13 अक्टूबर को झुंझुनूं व 26 अक्टूबर को सिवाना में बैठक रखी गई। झुंझुनूं के बगड़ कस्बे में आयोजित बैठक में उपस्थित लोगों को फाउंडेशन के उद्देश्यों एवं कार्य प्रणाली को स्पष्ट किया गया एवं सबसे सम्पर्क कर पुनः पूरे जिले की बैठक रखने का निर्णय लिया गया। सिवाना के कल्ला रामयलोत राजपूत छात्रावास में आयोजित बैठक में उपस्थित समाज बंधुओं को विस्तार से फाउंडेशन की अवधारणा समझाई गई। सिवाना विधायक हमीरसिंह भायल ने फाउंडेशन के कार्यों को समाज के लिए आवश्यक बताया एवं आर्थिक आधार पर आरक्षण विषय में किए गए प्रयास को प्रशंसनीय बताया। बैठक के बाद अनौपचारिक चर्चा में समदड़ी, पादरू आदि स्थानों पर बैठकों की भी योजना बनी।

विद्यालयों में गीता वितरण

जाट, विश्नोई एवं संबंधित जातियों में यथार्थ गीता वितरण हेतु स्वामीजी के आदेश की पालनार्थ संघ के बाड़मेर संभाग द्वारा विद्यार्थियों के माध्यम से उनके परिवारों तक गीता पहुंचाने का प्रयास किया गया। संभाग प्रमुख कृष्णसिंह राणीगांव के निर्देशन में राउमावि शिवकर, राउमावि गालाबेरी, राउमावि मगने की ढाणी के कक्षा 10 से 12वीं तक के इन वर्गों के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को 598 यथार्थ गीता वितरित की गई। विद्यार्थियों को गीता का महात्म्य बताया गया। स्वयं पढ़ने व अपने अभिभावकों को पढ़ने का निवेदन करने का आग्रह किया गया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super
Specialized
Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

(पृष्ठ तीन का शेष) शिविरों की...

शिविर व्यवस्था में उम्मेदसिंह सुल्ताना, मनोहरसिंह गुड़ा, हडवन्तसिंह आशापुरा, दयालसिंह किशोरपुरा ने सहयोग किया। जालोर संभाग के रानी फालना प्रान्त में बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर नाडोल में आशापुरा माताजी मंदिर के प्रांगण में सम्पन्न हुआ। 22 से 25 अक्टूबर तक आयोजित इस शिविर में नाडोल, गुड़ा केसरसिंह, रानी, पाली शहर, सोजत, रायपुर, बासनी, तखतगढ़, धींगाणा, आहोर, जालोर आदि स्थानों से 220 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन वरिष्ठ स्वयंसेवक दीपसिंह बेण्यांकाबास के निर्देशन में रश्मि कंवर देलदरी ने किया। उन्होंने बालिकाओं को बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा समाज सेवा के जिस यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है उसमें हमारे त्याग और तपस्या रूपी आहुतियों की आवश्यकता है। त्याग और तपस्या से ही किसी कौम, समाज अथवा राष्ट्र के सम्मान की कीमत जुटाई जा सकती है। नारायणसिंह आकड़ावास, ओंकारसिंह पांचलवाडा, जितेन्द्र सिंह मगरतलाव, दलपतसिंह गुड़ा केसरसिंह, बहादुरसिंह सारंगवास, भवानीसिंह बासनी आदि ने व्यवस्था में सहयोग किया। बाड़मेर संभाग के चोहटन प्रान्त में विरात्रा महाविद्यालय में बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 22 से 25 अक्टूबर तक तक आयोजित हुआ। शिविर में बाड़मेर, चौहटन, रणधा, नवातला, आकोड़ा, सणाऊ, दुधवा, केलनोर, उण्डखा, रानीगांव, बिजेरी, देदूसर, बूठ, जोधपुर, गंगाला, शिवकर, नवापुरा, इन्द्रोई आदि स्थानों की 140 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन रामसिंह माडपुरा के निर्देशन में उषा कंवर पाटोदा ने किया। उन्होंने बालिकाओं को संघ का विचार दर्शन समझाते हुए बताया कि जैसे पुष्प की सार्थकता भगवान की पूजा में चढ़ने में होती है वैसे ही हमारे जीवन की सार्थकता भी समाज की सेवा में समर्पित होने में है। समष्टि ही व्यष्टि और परमेष्टि के बीच की कड़ी है अर्थात संघ समाज की सेवा को ही परमात्मा तक पहुंचने का माध्यम मानता है। 22 से 25 अक्टूबर की अवधि में ही जैसलमेर संभाग के चांधन प्रान्त के देवीकोट स्थित मल्लीनाथ छात्रावास में भी बालिकाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ जिसमें हिंगोनिया (जयपुर), बालवाड़ा (जालोर), आकदड़ा, भिंयाड़, फोगेरा, बाड़मेर, बेरसियाला, चांधन, बरना, लूणाखुर्द, राजगढ़, झिंझनियाली, छायण, सगरा, आसकंद्रा, म्याजलार, सांवता, दामोदरा, बीलिया, बडोड़ा गांव, सनावड़ा, मसूरिया, सिपला, पोछीणा, फुलिया, धीरपुरा, खड़ेरो की ढ़ाणी, जेठा आदि गांवों की 101 बालिकाओं ने भाग लिया। शिविर का संचालन यशवीर कंवर बेण्यांकाबास ने किया। उन्होंने बालिकाओं को सचेत करते हुए कहा कि हमारा उज्ज्वल और गौरवशाली इतिहास हमारे पूर्वजों ने अपने त्याग और बलिदान से निर्मित किया है। हमारा दायित्व है कि हम अपने व्यवहार से कभी भी उस गौरव पर आंच नहीं आने दें। अपने पूर्वज, अपने परिवार, अपने समाज के प्रति हमारी कृतज्ञता ही हमारे आचरण को श्रेष्ठ बना सकती है। व्यवस्था का जिम्मा उगमसिंह लूणाखुर्द ने संभाला। इसी प्रकार उदयपुर संभाग के अंतर्गत सेमारी स्थित सेमारी पब्लिक स्कूल में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 22 से 25 अक्टूबर तक सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह साजियाली के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में सेमारी, भीमपुर, निचला गुड़ा, उपला गुड़ा, चंदौड़ा, बड़ावली, मल्लाड़ा, पहाड़ा, टोकर, कुन्डा, बाणा खुर्द, भेकड़ा, कुराड़िया, परसिया (उ.प्र.), अखेपुर, थड़ा, भैरवा, वणवासा, बिच्छिवाडा (डूंगरपुर) आदि स्थानो से 120 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक ने युवाओं से अपनी ऊर्जा को सकारात्मक कार्यों में लगाने का आह्वान करते हुए कहा कि यहां से जो शिक्षण आपको मिला है, उसे निरंतर अभ्यास द्वारा अपने आचरण का अंग बनाना है। डुंगरसिंह भीमपुर, कर्नल केशरसिंह सेमारी, कालूसिंह चंदौड़ा, रणजीतसिंह भीमपुर, डूलेसिंह भीमपुर आदि का व्यवस्था में सहयोग रहा।

बीकानेर संभाग के अंतर्गत चुरू प्रांत के फेफाना (हनुमानगढ़) गांव में भी 22 से 25 अक्टूबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसमें रेड़ी, फेफाना, खुंडया, बिरकाली, भलवाणी, भूकरकी, गदली (हरियाणा) आदि गांवों से 50 युवा सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन राजेन्द्रसिंह आलसर ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि संघ के आह्वान पर आपने इस साधना हेतु स्वयं को प्रस्तुत किया है यह आपके सामाजिक भाव का प्रमाण है। संघ दर्शन की आधारभूमि यही सामाजिक भाव है। शिविर का आयोजन एम. डी. कॉलेज के परिसर में हुआ तथा कॉलेज संचालक रोहिताश जी ने शिविर व्यवस्था में सहयोग किया, साथ ही उन्होंने संस्कारनिर्माण के इस कार्य की प्रशंसा करते हुए शिविरार्थियों को उपहारस्वरूप पेन भेंट की। नागौर संभाग के लाडनूं- सुजानगढ़ प्रांत के अंतर्गत बोबासर गांव में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 23 से 26 अक्टूबर की अवधि में सम्पन्न हुआ जिसमें बोबासर, ढींगसरी, जुलियासर, ढूंडिया, सालासर, कासली, भूंडेल, जीनरासर, देवानी, लाडनूं, सुजानगढ़, लिखमणसर, लोढसर, मिंगणा, दूंकर, बरवाली, ठरडा, गुणाटू, बिंज्यासी, भोजलाई, करीरी, गुढा जैतमालोत आदि स्थानों के 98 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए नत्थु सिंह छापड़ा ने शिविरार्थियों से कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने इस युग में असंभव दिखने वाले सिद्धान्तों को अपने जीवन व्यवहार में उतारकर हमें आदर्श की राह दिखाई है। उन्होंने जैसा जीवन जीया है वह सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने हमारे कल्याण के लिए संघ रूपी अनुपम धरोहर हमें प्रदान की है जिसे निष्ठापूर्वक संभालना हमारा दायित्व है। राजेन्द्रसिंह बोबासर, चांदसिंह बोबासर ने समस्त ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

फलसूंड में गीता वितरण

फलसूंड में आयोजित सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के दौरान 23 अक्टूबर को सर्व समाज स्नेहमिलन आयोजित किया गया जिसमें सुथार, जाट, कुम्हार, आचार्य, मेघवाल, दर्जी, वैष्णव, भील, जीनगर, ब्राह्मण, राजपुरोहित, माहेश्वरी, जैन, चारण आदि समाजों के लोग शामिल हुए। स्नेहमिलन को संबोधित करते हुए संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकरसिंह महरोली ने बताया कि भगवान ने संपूर्ण जगत को मनुष्य के निर्वाह के लिए बनाया एवं मनुष्य को अपने लिए बनाया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ न्यूनतम आवश्यकताओं में निर्वाह का अभ्यास करवा कर संसार में निर्वाह करते हुए सेवा के मार्ग पर अग्रसर करता है। स्नेहमिलन में सभी को यथार्थ गीता की प्रति भेंट की गई। स्नेहमिलन में शिविर संचालक महेन्द्रसिंह गुजरावास, ताराचंद टावरी, जगदीश टावरी, गंगासिंह जोधा आदि ने भी विचार रखे। संचालन गणपतसिंह अवाय ने किया।

(पृष्ठ दो का शेष)

ईच्छा और...

वे महान लेखक, महान आन्दोलनकर्ता, राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ थे। इन्हीं गुणों के कारण वे भूस्वामी आंदोलन के प्रणेता तथा सफल संचालक रहे। आप मारवाड़ राजपूत सभा के महामंत्री भी रहे। उन्हें 1954 में श्री क्षत्रिय युवक संघ का द्वितीय संघ प्रमुख बनाया गया। हमें उनके झुझारू जीवन से प्रेरणा लेते हुए अपने जीवन को समाजसेवा में नियोजित करना चाहिए। इसी प्रकार आयुवानसिंह जी की जयंती राघवा में भी उत्साह से मनाई गई। प्रेमसिंह पूनमनगर ने माट्साब का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि 17 अक्टुबर 1920 को एक साधारण परिवार में जन्म लेने वाले आयुवानसिंह जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी एवं एक विरले व्यक्तित्व के स्वामी थे। परिचय के बाद सभी समाजबन्धुओं ने पुष्पांजलि अर्पित की। शिक्षक भगवानसिंह राघवा ने कहा कि उनकी एक सीख भी हमारे जीवन को सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम श्री क्षत्रिय युवक संघ के संपर्क में निरन्तर बने रहें। कार्यक्रम का संचालन भगवानसिंह जोगा ने किया। इस अवसर पर शिक्षक महेन्द्रसिंह सोनू, भूरसिंह राघवा, सुमेरसिंह नगा, मूलसिंह, बाबूसिंह, अमृतसिंह, अशोकसिंह, लीलूसिंह, अजयपालसिंह राघवा सहित ग्रामवासी उपस्थित रहे।

विजय भवन शाखा, प्रान्त बीकानेर में भी समारोहपूर्वक जयन्ती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक कान सिंह बोघेरा ने श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए सभी स्वयंसेवकों को उनसे प्रेरणा लेने की बात कही। कार्यक्रम में बीकानेर प्रान्त की विजय भवन, पंचवटी, नारायण निकेतन शाखा के स्वयंसेवक उपस्थित रहे। बीकानेर में श्री करणी शाखा, कीरतासर में भी जयन्ती मनाई गई। शाखा प्रमुख सवाई सिंह भुरासर ने श्रद्धेय माटसाब के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डाला।

सूरत में सारोली के वीर अभिमन्यु पार्क में भी 17 अक्टूबर को आयुवानसिंह जी की 99वीं जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने बताया कि जो व्यक्ति अपने निश्चित सिद्धांतों को सामाजिक सिद्धांतों के रूप में रखकर उन्हें सामाजिक जीवन में ढालने की क्षमता रखता हो, समाज उसी के पीछे चलने को तत्पर रहता है। व्यक्ति नहीं बल्कि उनके आदर्श पूजे जाते हैं। लोग उन्हीं की जयंतियां मनाते हैं जो अपने लिए नहीं बल्कि समाज के लिए जीते हैं। कार्यक्रम को बाबूसिंह रेवाड़ा, श्यामसिंह मालूंगा व भवानीसिंह माड़पुरिया ने संबोधित किया। इस अवसर पर सूरत में लगने वाली संघ की सभी शाखाओं से स्वयंसेवक उपस्थित थे। गुजरात में भाल प्रान्त के अंतर्गत धोलेरा गांव में भी आयुवानसिंह जी की जयंती मनाई गई, जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक प्रवीण सिंह धोलेरा ने माटसाब का जीवन परिचय प्रस्तुत किया तथा उनके व्यक्तित्व व कृतित्व से उपस्थित समाजबंधुओं को अवगत करवाया। गुजरात में ही भक्तिनगर में 20 अक्टूबर को आयुवानसिंह जी की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए धर्मेंद्रसिंह आम्बली ने कहा कि आयुवानसिंह जी के जीवन से हमें कभी भी किसी भी परिस्थिति में हार नहीं मानने की शिक्षा लेनी चाहिए तथा विपरीत परिस्थितियों में भी संघकार्य में जुटे रहने का संकल्प लेना चाहिए।

दिल्ली एनसीआर प्रान्त में नारायण शाखा, शास्त्रीनगर में भी जयन्ती मनाई गई। कार्यक्रम का संचालन हर्षवर्धन सिंह रेड़ा ने किया। उपस्थित स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री की तस्वीर पर पुष्प अर्पित किये। माननीय संघप्रमुख श्री के निर्देशानुसार वर्ष 2019-20 को आयुवानसिंह जी के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मनाने तथा साल भर हर शाखा में अलग-अलग जयंती कार्यक्रम रखने व मेरी साधना के पठन का निर्णय हुआ। कार्यक्रम में कुल 65 की संख्या में स्वयंसेवक व समाजबंधु उपस्थित रहे। इसी प्रकार मुम्बई प्रान्त की नारायण शाखा, भायन्दर में शाखा स्तर पर 20 अक्टूबर को जयन्ती कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में बारिश के बावजूद भी 103 की संख्या में स्वयंसेवक व समाज बंधु आयुवान सिंह जी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने उपस्थित हुए। जन्म शताब्दी वर्ष के तहत मुम्बई में विभिन्न स्थानों पर वर्ष भर जयन्ती कार्यक्रम रखे जाएंगे। प्रताप छात्रावास शाखा, बागोड़ा में भी श्री हुडील की जयन्ती मनाई गई जिसमें नरपतसिंह भालीखाल ने आयुवान सिंह जी के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि आयुवान सिंह जी ने अपना जीवन समाज के लिए समर्पित कर दिया था, समाज कार्य के लिए अपनी नौकरी से भी त्यागपत्र दे दिया था। आज इस शुभ वेला में हमें भी समाज हित के लिए कार्य करने का पवित्र संकल्प लेना चाहिए। चित्तौड़गढ़ में 'श्री राम भवन' में जयन्ती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक गंगासिंह साजियाली तथा गोपालशरणसिंह सहाड़ा उपस्थित रहे। इस प्रकार सघं की सभी शाखाओं में इस अवसर पर अपने पूर्व संघ प्रमुख को याद किया।

(पृष्ठ एक का शेष)

अब आठ लाख... उनके आश्वासन की वीडियो क्लिप बनाकर सोशल मीडिया के माध्यम से समाज के हर वर्ग तक पहुंचाया गया ताकि समाज हर स्तर पर इस मांग को उठाने के लिए कटिबद्ध हो। इस अभियान का प्रभावी असर हुआ। अनेक विधायकों ने इस विषय पर सरकार का ध्यान खींचा। अनेक विधायकों की मांग के कारण माननीय विधानसभा अध्यक्ष ने इस विषय पर अलग से चर्चा करवाने का आश्वासन दिया और सरकार से बात कर इस विषय पर मुख्यमंत्री जी को बयान देने के लिए तैयार किया। नेता प्रतिपक्ष एवं उपनेता प्रतिपक्ष ने बजट बहस के दौरान अपने वक्तव्यों में इस विषय को पर्याप्त स्थान दिया। अंत में मुख्यमंत्री महोदय ने बजट पर बहस का जवाब देते हुए इस विषय में मंत्री समूह गठित कर अध्ययन करवाने की घोषणा की। इससे पूर्व फाउंडेशन की टीम द्वारा जयपुर में पिंकसिटी प्रेस क्लब में प्रेस वार्ता कर विधायकों के सहमति पत्र प्रेस से साझा किए। राजस्थान पत्रिका ने इस विषय की गंभीरता को समझ कर अपने सभी संस्करणों में प्रथम पृष्ठ पर फाउंडेशन के हवाले से इस खबर को स्थान दिया। लेकिन विधानसभा सत्र के अवसान के बाद सरकार ने मंत्री समूह का गठन नहीं किया तो फिर इस विषय पर ज्ञापन देने का निर्णय लिया गया। एक साथ एक ही दिन में 51 स्थानों पर मुख्यमंत्री जी के नाम ज्ञापन दिए गए। दो तीन दिन में कुल मिलाकर 75 से अधिक स्थानों पर सरकार को अपनी घोषणा पर अमल करने का स्थानीय प्रशासन के माध्यम से आग्रह किया गया। व्यक्तिगत सम्पर्कों द्वारा मुख्यमंत्री जी के निकट के लोगों को इस विषय पर मुख्यमंत्री जी से आग्रह करने का निवेदन किया गया। इस बीच समाज में इस विषय पर आई जागृति के परिणाम स्वरूप अनेक संगठनों एवं लोगों ने अपने स्तर पर सरकार से मांग करनी प्रारम्भ की। अनेक स्थानों पर धरने-प्रदर्शन एवं अनशन आदि भी हुए। सीकर के कुछ युवाओं ने सात दिन तक अनशन किया। जयपुर में इस व्यवस्था में आरक्षण से वंचित रह रहे अनेक लोगों ने प्रदर्शन किए। इस प्रकार विभिन्न स्तरों पर किए गए प्रयासों ने मुख्यमंत्री जी का ध्यान आकृष्ट किया। अंत में 18 अक्टूबर को माननीय मुख्यमंत्री जी के आमंत्रण पर श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन का एक प्रतिनिधिमंडल उनके आवास पर विस्तृत ज्ञापन के साथ पहुंचा। माननीय मुख्यमंत्री जी को बताया गया कि आरक्षण से वंचित वर्ग में इन शर्तों के कारण सरकार के प्रति यह नकारात्मकता विकसित होती जा रही है कि यह सरकार उनके हितों के प्रति गंभीर नहीं है और जानबूझ कर एक बड़े वर्ग की न्यायपूर्ण मांग की अवहेलना कर रही है। मुख्यमंत्री जी की इस आशंका को भी दूर किया गया कि शर्तें हटाने से गरीब को हानि होगी। उनसे निवेदन किया गया कि अचल संपत्ति होना आर्थिक रूप से समृद्ध होने का मापदंड नहीं है। पूर्वजों द्वारा छोड़े गए मकान, भूमि आदि आय नहीं दे रहे हैं तो इनके कारण कोई व्यक्ति धनवान कैसे माना जा सकता है। उनसे यह भी निवेदन किया गया कि सीलिंग एक्ट में भी यहां की कृषि भूमि को अनुपजाऊ मानते हुए अलग-अलग प्रावधान किए गए हैं। उन्हें यह भी निवेदन किया गया कि वर्तमान व्यवस्था के कारण तो प्रमाण-पत्र ही नहीं बन पा रहे हैं, इस वर्ष महाविद्यालयों एवं अन्य रिक्तियों में इस आरक्षण की सीटें खाली रही हैं ऐसे में इस आरक्षण का क्या लाभ? साथ ही उनसे एमबीसी की तरह प्रक्रियाधीन भर्तियों में इसे लागू करने की मांग की गई तथा अन्य आरक्षित वर्गों की तरह उम्र आदि के प्रावधान में भी छूट की मांग की गई। मुख्यमंत्री जी ने हर बिन्दू पर तसल्ली से पूरी बात सुनी-समझी एवं सकारात्मक निर्णय का आश्वासन दिया। 18 अक्टूबर की रात तक मुख्यमंत्री जी ने सकारात्मक निर्णय लिया और भूमि एवं भवन आदि अचल संपत्ति की शर्तें हटा कर केवल 8 आठ लाख वार्षिक आय की ही शर्त रखी। 20 अक्टूबर की शाम तक सरकार द्वारा इस बाबत नोटिफिकेशन भी जारी कर दिया गया और इस प्रकार 1999 से प्रारम्भ हुई सामान्य वर्ग की आरक्षण की लड़ाई एक सुखद पड़ाव पर पहुंची। इस पड़ाव तक की यात्रा में अनेक संगठनों एवं लोगों की अपने-अपने स्वभाव के अनुसार भूमिका रही। वे सभी साधुवाद के पात्र हैं। विशेष रूप से माननीय मुख्यमंत्री जी इस पूरे प्रकरण में अपने सकारात्मक निर्णय के लिए साधुवाद के पात्र हैं। मुख्यमंत्री जी तक एवं सरकार तक इस विषय को प्रभावी ढंग से पहुंचाने वाले पक्ष-विपक्ष के सभी राजनेता भी साधुवाद के पात्र हैं। यह किसी व्यक्ति या संगठन की नहीं बल्कि सम्पूर्ण समाज की सक्रियता का परिणाम है इसलिए सम्पूर्ण समाज इसके लिए साधुवाद का पात्र है। लेकिन अभी भी इसमें वे सभी सुविधाएं नहीं मिली हैं जो अन्य आरक्षित वर्गों को मिली हुई हैं। केन्द्र सरकार की नौकरियों एवं शिक्षा में अभी भी पुरानी शर्तें लागू हैं। उन सबकी मांग निरन्तर जारी रखनी है लेकिन जो मिला है उसका पूरा लाभ लेना है। अब तक हम आरक्षण का बहाना बनाया करते थे, वह अब नौकरी और शिक्षा में समाप्त हो गया है इसलिए इस क्षेत्र में बनी अनुकूलता का पूरा लाभ लेने के लिए सम्पूर्ण समाज को तैयार करने के लिए हर जागरूक व्यक्ति को अपनी भूमिका निभानी चाहिए।

राजपूत क्लब ऑफ टेक्नोक्रेट्स का 10वां वार्षिकोत्सव

बीकानेर स्थित दोनों इंजीनियरिंग कॉलेज के पूर्व एवं वर्तमान छात्रों के राजपूत क्लब ऑफ टेक्नोक्रेट्स का 10वां वार्षिक उत्सव 13 अक्टूबर को बीकानेर में संपन्न हुआ। सभी टेक्नोक्रेट्स आपस में परिचित हुए एवं सीनियर्स ने साथियों को अपने अनुभवों से परिचित करवाया तथा आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। असिस्टेण्ट प्रोफेसर राजेन्द्रसिंह शेखावत के निर्देशन में संपन्न कार्यक्रम में सदर एसएचओ ऋषिराजसिंह, रामसिंह चरकड़ा, भगवानसिंह मेड़तिया, धर्मसिंह बांकावत, हिम्मतसिंह नरुका, शरदसिंह पायली आदि अतिथि के रूप में मौजूद रहे। रामसिंह चरकड़ा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ एवं श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की जानकारी दी।

संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा पदक से सम्मानित

बाड़मेर के गिराब गांव के निवासी एवं राजस्थान पुलिस आयुक्तालय के पुलिस निरीक्षक संग्रामसिंह भाटी को संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन साईप्रस में किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति रक्षा पदक 2019 से सम्मानित किया गया है। वे पूर्व में न्यूयार्क स्थित संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में से अपनी सेवाएं दे चुके हैं।

राज्य स्तरीय प्रतिभा सम्मान के लिए आवेदन आमंत्रित

अजमेर में विगत 21 वर्षों से श्री क्षत्रिय प्रतिभा एवं शोध संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किए जाने वाले क्षत्रिय प्रतिभा सम्मान समारोह के लिए संस्थान द्वारा आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। संस्थान द्वारा 3 लाख से कम वार्षिक आय वाले परिवारों के 31 छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति भी प्रदान की जाती है एवं साथ ही प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए निःशुल्क कोचिंग भी करवाई जाती है। शैक्षणिक सत्र 2018-19 के लिए जनवरी 2020 में आयोजित होने वाले सम्मान समारोह के लिए आवेदन प्राप्ति की अंतिम तारीख 30 नवम्बर है। आवेदन के लिए पात्रता की शर्तें व अन्य विस्तृत विवरण संस्थान की वेबसाइट www.kshatriyapratibha.in पर उपलब्ध है।

राजस्थानी राजपूत परिषद ट्रस्ट अहमदाबाद का दशहरा मिलन

अहमदाबाद के राजस्थानी राजपूत परिषद ट्रस्ट का सातवां दशहरा मिलन कार्यक्रम श्री प्रतापपुरी जी महाराज के सानिध्य में आयोजित हुआ। इसमें प्रतिभावान विद्यार्थियों को गीता एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। सिविल हॉस्पीटल के निकट समाज का भवन बनवाने के लिए चर्चा की गई एवं समाज बंधुओं द्वारा सहयोग राशि की घोषणा की गई। ट्रस्ट के अध्यक्ष हनुमंत सिंह मीठड़ी ने सबका आभार जताया।

मातुसिंह मानपुरा को पितृशोक

बनेसिंह राठौड़

संघ के स्वयंसेवक मातुसिंह मानपुरा के पिता **बनेसिंह राठौड़** का देहावसान 15 अक्टूबर को 93 वर्ष की उम्र में हुआ। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए परमेश्वर से उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

इन्द्रसिंह बलाई का देहावसान

इन्द्रसिंह बलाई

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक **इन्द्रसिंह बलाई** का 20 अक्टूबर को भियाड़ में आयोजित सात दिवसीय प्रशिक्षण शिविर के दौरान हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। 8 मई 1948 को जन्में इन्द्रसिंह जी अगस्त 1972 में हुए केराडू शिविर में संघ में प्रथम बार आए। उन्होंने कुल 30 शिविर किए। परमेश्वर उनको अपने श्री चरणों में स्थान देवें एवं परिजनों को इस आघात को सहने की शक्ति देवें।

मोतीसिंह आकोड़ा नहीं रहे

संघ के स्वयंसेवक **मोतीसिंह आकोड़ा** का 24 अक्टूबर को देहावसान हो गया। परमेश्वर उनकी आत्मा को शांति देवें एवं परिजनों को इस आघात को सहने की क्षमता देवें।

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं

श्री मूलसिंह बेतिणा

श्री परबतसिंह सत्याया

हमारे प्रिय
श्री मूलसिंह बेतिणा,
श्री राणसिंह बिंजराड़,
श्री परबतसिंह सत्याया
एवं
श्रीमती पुष्पा कंवर भायल
को पदोन्नत होकर पुलिस निरीक्षक बनने पर

हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

श्री राणसिंह बिंजराड़

श्रीमती पुष्पा कंवर भायल

भवानीसिंह	भैंरूसिंह	प्रेमसिंह	रूपसिंह	रावलसिंह
मूंगेरिया	बेलवा	पांचला	परेऊ	भाखरी
हरिसिंह	सुरेन्द्रसिंह	नाथूसिंह	उम्मेदसिंह	रघुवीरसिंह
ढेलाणा	रूद	बालेसर सत्ता	अनोपगढ़	बेलवाराणजी
स्वरूपसिंह	भोमसिंह	उम्मेदसिंह	भवानीसिंह	लक्ष्मणसिंह
बड़ला	सेतरावा	सेतरावा	पीलवा	गुड़ानाल
राजूसिंह	अर्जुनसिंह	नरपतसिंह	देवेन्द्रसिंह	देवेन्द्रसिंह
बेदु	जिनजीनयाला कला	रामदेरिया	भाखरी	सहनाली
करणीपालसिंह	दातारसिंह	चन्द्रवीरसिंह	सोहनसिंह	पाबुसिंह
गांवड़ी	दुगोली	देणोक	कालेवा	लवारन
बाबूसिंह	गुलाबसिंह	लूणकरणसिंह		
बापिणी	बस्तवा	तेना		

एवं समस्त मित्रगण।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org